International Journal of Engineering Applied Science and Management
ISSN (Online): 2582-6948
Vol. 5 Issue 3, March 2024

भारतीय ग्रामीण उद्यमिता और जनशक्ति क्षेत्र में औद्योगिक विकास विशेष रूप से छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के संदर्भ में

डॉ. सुनीता सोनवानी[1], शीतेन्द्र कुमार साहू[2]
गाईड भूगोल विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़[1]
पी.एच.डी. शोधार्थी, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़[2]

सारांश: *भारत के गांवों में खर्च करने की क्षमता है, लेकिन उनके पास कुछ अनोखी समस्याएँ भी हैं। इस संयोजन ने पेशेवरों के बीच उद्यमशीलता को प्रोत्साहित किया है, जो समाधान पेश करने और ग्रामीण अवसर का दोहन करने का प्रयास कर रहे हैं। प्रौद्योगिकी में बदलाव भी स्टार्टअप्स को नए अनुप्रयोगों की पेशकश करने में सक्षम बना रहा है जो ग्रामीण उपभोक्ताओं के अनुकूल हैं। यह अवसर का पैमाना है जो कई उद्यमियों को ग्रामीण भारत की ओर आकर्षित कर रहा है। बस्तर, जनजातीय जिला, तीन जिलों में विभाजित होने से पहले, भारत के सबसे बड़े जिलों में से एक था, जिसका क्षेत्रफल 39114 वर्ग किलोमीटर था, जो केरल राज्य और बेल्जियम, इजराइल जैसे कुछ अन्य देशों से भी बड़ा था। वर्ष 1999 में, बस्तर जिले को तीन जिलों में विभाजित किया गया था, अर्थात् बस्तर, कांकेर और दंतेवाड़ा। ये सभी तीन जिले बस्तर संभाग के अंतर्गत आते हैं, जिसका संभागीय मुख्यालय जगदलपुर में है, जो बस्तर जिले का जिला मुख्यालय भी है। बस्तर जिले की सुंदरता इसके प्राकृतिक वन क्षेत्र और विभिन्न प्रकार की जनजातियों में निहित है। कुल वन क्षेत्र 7112 वर्ग किलोमीटर है, जो जिले के कुल क्षेत्रफल का 75ः से अधिक है। कुल जनसंख्या का 70ः से अधिक हिस्सा गोंड, अबूझ मारिया, दारदा मारिया, बायसन हॉर्न मारिया, मुनीया डोरिया, ध्रुवा, भतरा, हल्बा आदि जैसी जनजातियों का है।*

मुख्या शब्द: *ग्रामीण* , समस्याएँ , जनजातियों

परिचय

भारत के गांवों में खर्च करने की क्षमता है, लेकिन उनके पास कुछ अनोखी समस्याएँ भी हैं। इस संयोजन ने पेशेवरों के बीच उद्यमशीलता को प्रोत्साहित किया है, जो समाधान पेश करने और ग्रामीण अवसर का दोहन करने का प्रयास कर रहे हैं। प्रौद्योगिकी में बदलाव भी स्टार्टअप्स को नए अनुप्रयोगों की पेशकश करने में सक्षम बना रहा है जो ग्रामीण उपभोक्ताओं के अनुकूल हैं। यह अवसर का पैमाना है जो कई उद्यमियों को ग्रामीण भारत की ओर आकर्षित कर रहा है। बस्तर, जनजातीय जिला, तीन जिलों में विभाजित होने से पहले, भारत के सबसे बड़े जिलों में से एक था, जिसका क्षेत्रफल 39114 वर्ग किलोमीटर था, जो केरल राज्य और बेल्जियम, इजराइल जैसे कुछ अन्य देशों से भी बड़ा था। वर्ष 1999 में, बस्तर जिले को तीन जिलों में विभाजित किया गया था, अर्थात् बस्तर, कांकेर और दंतेवाड़ा। ये सभी तीन जिले बस्तर संभाग के अंतर्गत आते हैं, जिसका संभागीय मुख्यालय जगदलपुर में है, जो बस्तर जिले का जिला मुख्यालय भी है। बस्तर जिले की सुंदरता इसके प्राकृतिक वन क्षेत्र और विभिन्न प्रकार की जनजातियों में निहित है। कुल वन क्षेत्र 7112 वर्ग किलोमीटर है, जो जिले के कुल क्षेत्रफल का 75ः से अधिक है। कुल जनसंख्या का 70ः से अधिक हिस्सा गोंड, अबूझ मारिया, दारदा मारिया, बायसन हॉर्न मारिया, मुनीया डोरिया, ध्रुवा, भतरा, हल्बा आदि जैसी जनजातियों का है।

बस्तर जिला, छत्तीसगढ़ राज्य का एक जिला है, जो मध्य भारत में स्थित है। इस जिले का मुख्यालय जगदलपुर है। जिले का कुल क्षेत्रफल 10755.79 वर्ग किलोमीटर है। बस्तर जिला उत्तर–पश्चिम में राजनांदगांव जिला, उत्तर में कोंडागांव जिला, पूर्व में ओडिशा राज्य के नबरंगपुर और कोरापुट जिले, दक्षिण

और दक्षिण–पश्चिम में दंतेवाड़ा जिला, और पश्चिम में महाराष्ट्र राज्य के गढ़चिरौली जिला से घिरा हुआ है।
यदि हम भारतीय ग्रामीण विकास की ताजा स्थिति का विश्लेषण करना चाहते हैं, तो बस्तर अध्ययन के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह पेपर भारत के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में से एक के विकास और ग्रामीण उद्यमशीलता की स्थिति को उजागर करता है।

बस्तर की आर्थिक स्थिति

बस्तर में जीवन यापन का पैटर्न परंपरा से प्रभावित है। आज भी यहाँ की कृषि पद्धतियाँ पारंपरिक हैं। लकड़ी के हल का उपयोग अत्यधिक है जबकि लोहे के हल की संख्या नगण्य है। बैल गाड़ियों की संख्या अधिक है जबकि ट्रैक्टरों की संख्या बहुत कम है। पारंपरिक कृषि उपकरणों के उपयोग ने कृषि उत्पादन को कम कर दिया है।
यहाँ उगाई जाने वाली खरीफ फसलें हैं धान, उरद, अरहर, ज्वार और मक्का। रबी फसलों में तिल, अलसी, मूंग, सरसों और चना शामिल हैं। जंगल उत्पादों का संग्रह और बिक्री तथा अन्य वन संबंधित कार्य मामूली कृषि आय को पूरक बनाते हैं। अधिकांश लोगों को पूरे वर्ष रोजगार नहीं मिलता है। बाढ़ और सूखे के चक्र से जीवन यापन अत्यंत अस्थिर हो जाता है। लोग अक्सर संकट के समय में साहूकारों का सहारा लेने को मजबूर हो जाते हैं, जिससे आमतौर पर जीवन भर कर्ज में डूबे रहना पड़ता है। वैकल्पिक रोजगार के अवसरों की अनुपस्थिति इस क्षेत्र में गरीबी की उच्च दर के लिए जिम्मेदार है। बस्तर पठार में सिंचाई का कवरेज केवल 1.2 प्रतिशत है। अपनी जल संसाधनों में अत्यंत भाग्यशाली होने के बावजूद, इस क्षेत्र में अच्छी वर्षा और असमान भूभाग के कारण तेजी से बहाव होता है। वर्षा जल संचयन की संभावनाएं हैं।

कृषि और वन

वन लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, अल्पकालिक वन उत्पादों के संग्रह के माध्यम से खाद्य सुरक्षा और आजीविका प्रदान करते हैं, और वन विभाग में आकस्मिक श्रम के रूप में रोजगार भी प्रदान करते हैं। वन लोगों की उपभोग आवश्यकताओं को पूरा करते हैं – ईंधन और जलावन, दवाएं, भोजन और पेय, उपकरण और आवास सामग्री। बस्तर क्षेत्र में मुख्यतः खरीफ मौसम के दौरान वर्षा आधारित फसल के रूप में धान उगाया जाता है, जिसका क्षेत्रफल 2.389 लाख हेक्टेयर है, लेकिन इस फसल की उत्पादकता कम है, जो कि 08.53 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। बस्तर जिले में सिंचित क्षेत्र (1.67:) और उर्वरक का उपयोग (4.6 किग्राध्हेक्टेयर) बहुत कम है, जो फसल को पर्याप्त पोषक तत्व प्रदान करने के लिए अपर्याप्त है।

बस्तर में उद्यमिता विकास

कला और शिल्प

बस्तर में हस्तशिल्प का सबसे व्यापक रूप से अभ्यास किए जाने वाला क्षेत्र कोण्डागांव है। इस कला से कई उत्पाद बनाए जाते हैं जैसे बर्तन, आभूषण, स्थानीय देवताओं की मूर्तियाँ और कुछ सजावटी वस्तुएँ। उत्पादों की तैयारी की विधि काफी सरल है और इसे खोई मोम तकनीक के रूप में भी जाना जाता है, जो जनजातीय वातावरण के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। बस्तर जिला ढोकरा हस्तशिल्प से बने वस्तुओं की तैयारी में विशेषज्ञता रखता है। इस प्रक्रिया में काफी सटीकता और कौशल की आवश्यकता होती है। इस कला की ढोकरा तकनीक से तैयार की गई कलाकृतियों में गाय का गोबर, धान की भूसी और लाल मिट्टी का उपयोग किया जाता है, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण मोम होता है। आकार देने के अलावा, सजावट के लिए और कलाकृतियों को अंतिम रूप देने के लिए मोम की तारों का भी उपयोग किया जाता है। छत्तीसगढ़ के बेल मेटल हस्तशिल्प से कलाकारों की वास्तविक प्रतिभा और रचनात्मक क्षमता सामने आती है और इस प्रकार कुछ सबसे अद्भुत कला के टुकड़े बनते हैं।

बस्तर का औद्योगिक परिदृश्य

बस्तर जिला औद्योगिक रूप से विकासशील है। हालांकि, यह राज्य के अन्य औद्योगिक रूप से विकसित जिलों की तुलना में उतना विकसित नहीं है। कृषि–आधारित और खनिज–आधारित उद्योग जिले के मुख्य उद्योग हैं।

International Journal of Engineering Applied Science and Management
ISSN (Online): 2582-6948
Vol. 5 Issue 3, March 2024

उद्यमिता और औद्योगिकीकरण में समस्याएं

क्षेत्र में नक्सल आंदोलन

छत्तीसगढ़ के जनजातीय बहुल क्षेत्रों, विशेषकर अन्य राज्यों से सटे क्षेत्रों में विकास के बीच नक्सल आंदोलन सबसे बड़ा खतरा और बाधा है। छत्तीसगढ़ भर में नक्सली आंदोलन नाटकीय रूप से बढ़ गया हैय मानचित्र में लाल क्षेत्र स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि नक्सल आंदोलन ने राज्य को कैसे प्रभावित किया है और विशेष रूप से बस्तर जिला बुरी तरह प्रभावित हुआ है।

बस्तर जिले में औद्योगिक क्षेत्रों की वर्तमान स्थिति

क्रम संख्या	औद्योगिक क्षेत्र का नाम	अधिग्रहीत भूमि (हेक्टेयर में)	विकसित भूमि (हेक्टेयर में)	प्रचलित दर प्रति वर्ग मीटर (रुपये में)	प्लॉट की संख्या	रिक्त प्लॉट की संख्या	उत्पादन में इकाइयों की संख्या
1	गीदम रोड, जगदलपुर	12.612	12.612	-	-	-	49
2	फ्रेजरपु, जगदलपुर	13.50	13.50	-	-	-	26
3	कुरंडी	73.852	73.852	-	-	-	07
4	**कुल**	**104.784**	**104.784**	-	-	-	**83**

Source:- DIC, Jagdalpur

बस्तर जिले में औद्योगिक स्थिति पर एक नजर

क्रम संख्या	शीर्षक	इकाई	विवरण
1	पंजीकृत औद्योगिक इकाई	संख्या में	436
2	कुल औद्योगिक इकाई	संख्या में	436
3	पंजीकृत मध्यम और बड़े उद्योग	संख्या में	02
4	छोटे पैमाने पर उद्योगों में अनुमानित औसत दैनिक कार्यकर्ता संख्या	संख्या में	06
5	बड़े और मध्यम उद्योगों में रोजगार	संख्या में	150
6	औद्योगिक क्षेत्र की संख्या	संख्या में	04
7	छोटे पैमाने के उद्योगों का कारोबार	लाख में	10251.24
8	मध्यम और बड़े पैमाने के उद्योगों का कारोबार	लाख में	4920.00

प्रवासन की घटना

वर्तमान में छत्तीसगढ़ की स्थिति काफी विरोधाभासी है, जहाँ ग्रामीण आबादी का अधिकांश हिस्सा जीविका के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है और नौकरी की तलाश में दूरस्थ स्थानों की ओर पलायन करने के लिए मजबूर है। सूखे की स्थितियों में ग्रामीण–शहरी विभाजन और अधिक स्पष्ट हो गया है, जिसका शहरी केंद्रों पर अभी तक कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा है। सरकार की रोजगार गारंटी योजना (म्ळै) के बावजूद, अब तक क्षेत्र में किसान और ग्रामीण मजदूरों का प्रवाह अनवरत बना हुआ है।

विकास से प्रेरित विस्थापन

सरकार ने छत्तीसगढ़ में वन्यजीव संरक्षण के नाम पर कई अभयारण्यों का निर्माण किया है। इस प्रक्रिया में कई आदिवासियों को अपने गांवों को छोड़ने के लिए मजबूर किया गया है, जो इन अभयारण्यों के भीतर आते हैं। इसने आजीविका, पहचान, मानवाधिकार और प्रकृति और मानव के बीच संबंधों को प्रभावित किया है।

ऋणग्रस्तता

पर्याप्त आजीविका समर्थन, रोजगार, क्रेडिट समर्थन और आय की कमी के कारण भोजन, कपड़ा, दवा और अन्य सामाजिक और कृषि आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए गरीब लोग ऋणग्रस्तता के दुष्चक्र में फंस जाते हैं। साहूकारों से लिए गए ऋणों पर उच्च ब्याज दर गरीबों के लिए एक प्रमुख बाधा है। एक बार जब लोग इस जाल में फंस जाते हैं तो ऋण से छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है। कई मामलों में, यह जीवन भर जारी रहता है और पूरे परिवार की पीढ़ी दर पीढ़ी विभिन्न प्रकार के शोषण का कारण बनता है।

क्षेत्र के अधिकांश परिवार ऋणग्रस्त हैं। अज्ञानता और निरक्षरता के कारण उन्हें रिकॉर्ड में हेरफेर करके और कम मात्रा में ऋण के बदले मूल्यवान वस्तुओं को गिरवी रखकर धोखा और शोषण किया जाता है। यह जनजातियों से गैर–जनजातियों को भूमि

के हस्तांतरण का एक साधन भी बन गया है, जो कानून द्वारा निषिद्ध है।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ में स्वैच्छिकता की एक परंपरा रही है। असंतोष और विद्रोह लोगों के खून में है। प्राचीन और मध्यकालीन समय में भी राजनीतिक गतिविधियाँ उच्च स्तर पर थीं। आधुनिक समय के दौरान, लोगों ने संगठित तरीके से स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया। 20वीं सदी की शुरुआत में जब खनन और औद्योगिक गतिविधियाँ बढ़ीं तो ट्रेड यूनियन आंदोलन ने मजबूत जड़ें जमा लीं। इस क्षेत्र में ट्रेड यूनियन आम तौर पर गांधीजी और कांग्रेस आंदोलन, जेपी आंदोलन और कट्टरपंथी साम्यवादी (वामपंथी) विचारधाराओं से प्रभावित थे। आंदोलनों का आधार ग्रामीण लोगों के मुद्दे भी रहे हैं और इस संदर्भ में भारत जन आंदोलन एक उत्कृष्ट उदाहरण है। ग्रामीण उद्यमियों का विकास एक जटिल समस्या है जिसे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संस्थानों द्वारा निपटाया जा सकता है।

संदर्भ

[1] ''सुरक्षा संबंधित व्यय योजना के अंतर्गत 83 जिले''. IntelliBriefs-2009–12–11. प्राप्त किया गया 2011–09–17.
[2] ''जिला जनगणना 2011''. Census2011.co-in.2011. प्राप्त किया गया 2011–09–30.
[3] अमेरिकी खुफिया निदेशालय. ''देश तुलनाः जनसंख्या''. प्राप्त किया गया 2011–10–01. ''स्वाजीलैंड 1,370,424''
[4] ''2010 निवासी जनसंख्या डेटा''. अमेरिकी जनगणना ब्यूरो. प्राप्त किया गया 2011–09–30. ''हवाई 1,360,301''
[5] गेल, सिमेरन मैन सिंह. मुरी समाज में घोटुल (सिंगापुरः हारवुड अकादमिक प्रकाशक, 1992) पृष्ठ 1
[6] एम. पॉल लुईस, संपादक. (2009). ''भत्रीः भारत की एक भाषा''. भाषाओं की दुनिया का एथनोलॉग (16वां संस्करण). डलास, टेक्सासः SIL इंटरनेशनल. प्राप्त किया गया 2011–09–28.
[7] http://plantarchives.org/paper/Plant/20Archive/20vol/20(11-1):20351-354.